Ministry of Culture
Government of India

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

## साहित्य अकादेमी ने अपने महत्तर सदस्य रहमान राही के निधन पर शोक व्यक्त किया

नई दिल्ली। 9 जनवरी 2023; साहित्य अकादेमी ने कश्मीरी कवि, अनुवादक तथा आलोचक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री रहमान राही के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। साहित्य अकादेमी के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में अपराह्न 1.30 बजे आयोजित शोक सभा में साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को संबोधित करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य के गंभीर अध्येता होने के नाते तथा जीवन के व्यापक भावानात्मक अनुभव ने रहमान राही को साहित्य, विचारधारा या आस्था के मामले में हर तरह की खेमेबंदी से दूर रखा। अपनी अद्भुत रचनात्मकता के चलते वे कश्मीरी साहित्य की अमूल्य धरोहर बने रहेंगे। साहित्य अकादेमी श्री रहमान राही के परिवार के प्रति गहरी संवेदना और विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करती है। उनका निधन कश्मीरी साहित्य के लिए एक गहरा शून्य छोड़ने के साथ ही एक समृद्ध विरासत भी छोड़ गया है।

शोक सभा में सर्वप्रथम सचिव ने शोक संदेश पढ़ा एवं उसके बाद एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोक सभा के बाद उनके प्रति सम्मान प्रकट करते हुए साहित्य अकादेमी के समस्त कार्यालयों को आज आधे दिन के लिए बंद कर दिया गया।

ज्ञात हो कि कश्मीरी के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवियों और समालोचकों में से एक रहे रहमान राही ने अपनी कृतियों द्वारा कश्मीरी भाषा को अत्यंत समृद्ध किया। उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1961 में उनके कविता–संग्रह *नौरोज़–ए–सबा* के लिए दिया गया। सन 2002 में उन्हें भारत सरकार की ओर से पद्मश्री और 2004 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले कश्मीरी लेखक थे। उन्हें साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता 2000 में प्रदान की गई थी। 6 मई 1925 को श्रीनगर में जन्मे रहमान राही ने 1948 में अपना कार्यजीवन लोकनिर्माण विभाग में लिपिक के रूप में आरंभ किया। वे प्रगतिशील आंदोलन से भी जुड़े रहे और उसकी पत्रिका *क्वांग पोश* के कुछ अंकों का संपादन भी किया। 1953–55 तक वह दिल्ली से प्रकाशित उर्दू दैनिक *आजकल* के संपादक मंडल के सदस्य रहे। 1964 में फ़ारसी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में पदभार ग्रहण करने से पूर्व उन्होंने कई महाविद्यालयों में अध्यापन किया। *डाक्टर फ़ाउस्टस* और *बाबा फ़रीद* इत्यादि अनेक कृतियों का अंग्रेज़ी से कश्मीरी में अनुवाद भी किया। *कहवात* (1980) में संकलित रहमान राही के समालोचनात्मक निबंधों से कश्मीरी का अपना आलोचनात्मक मुहावरा विकसित हुआ। साहित्य अकादेमी रहमान राही के निधन पर पुनः श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

के. श्रीनिवासराव